eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

औरैया जनपद में स्वरोज़गार में खनिज, वन, पशु एवं मत्स्य संसाधनों का योगदान

[1]रवि गुप्ता

[2]एम.पी. गुप्ता

[1]वाणिज्य संकाय, विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर ,उत्तर प्रदेश

[2]वाणिज्य संकाय, विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर ,उत्तर प्रदेश

Received: 10 Jan 2022, Accepted: 20 Jan 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2022

Abstract

औरैया मध्य उत्तर प्रदेश के गंगा–यमुना दोआब क्षेत्र के मध्य स्थित ग्रामीण परिवेश वाला एक महत्वपूर्ण जिला है जो कि वर्ष 1997 में अस्तित्व में आया। यह नवसृजित जनपद गंगा व यमुना के दोआब में स्थित है जहाँ की 80% से अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि आधारित है। यहाँ कृषि आधारित व्यवसायों जैसे मत्स्यपालन, मधुमक्खी पालन, पशुपालन, वन आधारित उद्योग आदि व्यवसायों को बढ़ावा देकर रोज़गार सृजित करने की अपार सम्भावनाएं विद्यमान हैं। प्रस्तुत शोध उक्त क्षेत्रों को और अधिक उन्नत एवं रोज़गारपरक बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करता है।

तकनीकी शब्द – औरैया, खनिज, वन सम्पदा, पशुपालन, मत्स्य संसाधन आदि।

Introduction

मानव जीवन में श्रम एवं उद्योगों का अत्यधिक महत्व है। श्रम एवं उद्योग में एक विशेष प्रकार का आकर्षण है। श्रम व उद्योग के द्वारा ही किसी भी व्यक्ति, क्षेत्र अथवा देश के विकास का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। वर्तमान युग में प्रत्येक मानव विकासोन्मुखी है। वर्तमान में भौतिक सुखों एवं समृद्धि के लिए अर्थ तत्व अर्थात धन अत्यधिक आवश्यक है तथा अर्थ की प्राप्ति के लिए मानव को उद्योग एवं श्रम का सहारा लेना पड़ता है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री बार्टन के अनुसार श्रम एवं उद्योग चुम्बक के समान हैं जो कि सभी अच्छे पदार्थों को अपनी ओर खींच लेते हैं। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि मानव श्रम एवं उद्योग के माध्यम से प्रत्येक उस वस्तु को अपनी ओर आकर्षित कर सकता है जो उसके जीवन को समृद्ध बनाने में आवश्यक हो। श्रम एवं उद्योग में विश्वास करने वाले मनुष्य को जीवन में कभी किसी वस्तु का अभाव नहीं रहता। वह अपने बाहुबल पर विश्वास करके अपना जीवनयापन सुचारु रूप से कर सकता है। 1997 में इटावा में दो तहसीलों–बिधूना एवं औरैया को अलग करके नवीन जनपद बनाया गया। औरैया जनपद औद्योगिक दृष्टि से अत्यंत पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। जनपद की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। अतः रोज़गार सृजन, जीविकोपार्जन

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

व बढ़ती हुई जनसंख्या व औद्योगिक विकास हेतु क्रांतिकारी कदम उठाये जाने की आवश्यकता है। अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जनपद औरैया भारी उद्योगों के अनुकूल नहीं है। यहाँ पर कृषि आधारित लघु एवं कुटीर उद्योग, पशुपालन, मत्स्यपालन, कुक्कुटपालन एवं खनिज सम्पदा का समुचित प्रबन्धन करके नवीन रोज़गार सृजित किये जा सकते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र औरैया जनपद के विकास एवं रोज़गार निर्माण में खनिज संसाधन, वन सम्पदा, मत्स्यपालन एवं पशुपालन के योगदान को रेखांकित करने का प्रयास है। साथ ही इसके बेहतर प्रबन्धन हेतु सुझाव भी दिये गये हैं।

खनिज संसाधन

जनपद औरैया खनिज संसाधनों की उपलब्धता की दृष्टि से पिछड़ा हुआ क्षेत्र है व यहाँ पर केवल कुछ ही स्थानों पर यमुना नदी के किनारे पर बालू प्राप्त होती है। औरैया के बीसलपुर क्षेत्र में साधारण नीलामी के माध्यम से बालू का विक्रय होता है।

इसके अतिरिक्त औरैया जनपद में अनेक स्थानों पर कंकड़ (बजरी) का खनन किया जाता है। यह प्रायः भूमि की सतह पर एक मीटर की गहराई तक पाया जाता है, जबकि संकुचित रूप में नदियों के प्रवाह के निकट, 2–3 मीटर की गहराई तक पायी जाती है। प्राचीनकाल में इसका प्रयोग भवन निर्माण में किया जाता था। वर्तमान में इसका प्रयोग नींव में गड्ढों को समतल करने जैसे कार्यों में ही किया जाता है।

शीतकाल में जनपद औरैया में अनेक स्थानों पर मटमैले सफेद रंग का पाउडर जैसा खेतों, बंजर भूमि या मटियार क्षेत्रों में पाया जाता है जिसे रेहू कहते हैं। यह कुछ वर्गमीटर से लेकर कई किलोमीटर तक के विस्तार में भूमि की सतह पर पाया जाता है जो गहराई में 15 सेंटीमीटर तक होता है। यद्यपि रेहू कृषि के लिए अभिशाप माना जाता है, परंतु इसको एकत्र एवं शोधित करके उत्पाद एवं सह–उत्पाद बनाकर व उनको बेचकर आर्थिक लाभ पाया जा सकता है। रेहू में सब्ज़ी मिट्टी, सोडियम कार्बोनेट (धावन सोडा) प्राप्त होता है जिसका उपयोग साबुन बनाने एवं कपड़े धोने का पाउडर बनाने में किया जा सकता है। सोडियम कार्बोनेट को चूने के साथ मिलाकर कास्टिक सोडा बनाया जाता है जिसका उपयोग वनस्पति घी, कपड़ा, कागज़, रंग व पेंट उद्योग में किया जा सकता है।

वन सम्पदा

जनपद औरैया में वनों का प्रतिवेदित क्षेत्रफल लगभग 11000 हेक्टेअर क्षेत्र में है जो कुल क्षेत्रफल का लगभग 6ः है। इसमें से लगभग 1000 हेक्टेअर संरक्षित वन क्षेत्र है जो कि औरैया, अजीतमल, अछल्दा तथा बिधूना विकासखण्ड के अन्तर्गत आते हैं। औरैया के वन क्षेत्रों में मुख्यतः भवन निर्माण में प्रयोग की जाने वाली तथा ईंधन योग्य लकड़ी वाले वृक्ष पाये जाते हैं। इनमें बबूल, महुआ, नीम, बेर, शीशम, आम, बेल, खजूर आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त वन क्षेत्र में अनेक स्वतः उगने वाले औषधीय महत्व की वनस्पतियां भी पायी जाती हैं। वर्तमान में भूमि का कटाव रोकने व

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

ऊसर में विस्तार को रोकने के लिए विलायती बबूल का रोपण किया जा रहा है। यह कार्य बीहड़ क्षेत्रों में भी प्रगति पर है।

औरैया जनपद में वन क्षेत्रों में उगने वाले वृक्षों जैसे बेल, कैथा, जामुन, ताड़, महुआ, बेर, खजूर आदि का स्थानीय रोज़गार में बड़ा योगदान है। इसी प्रकार अनेक ग्रामीण वनौषधि संग्रह एवं शहद संग्रह करके जीवनयापन करने वाले हैं। बड़ी संख्या में महिलाएं एवं ग्रामीण जलावनी लकड़ी के संग्रहण एवं विक्री द्वारा भी जीवनयापन करते हैं।

पशु संसाधन

जनपद औरैया में गाय, भैंस, बकरी, भेड़, घोड़ा, सुअर, गधा आदि जानवर पाले जाते हैं। वर्ष 2013 की 18वीं पशुगणना के अनुसार यहाँ लगभग 2.5 लाख भैंसें, 1.25 लाख गोवंश (देशी व संकर मिलाकर), 10000 भेड़ें, लगभग 20000 बकरा–बकरी, लगभग 20000 सुअर, 240 घोड़े व खच्चर तथा लगभग 2500 अन्य पशु पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त लगभग एक लाख मुर्गे–मुर्गियां एवं 1000 बतखें भी पाली जा रही हैं। इस प्रकार पशुपालन जनपद औरैया में रोज़गार प्रदान करने वाला एक बड़ा माध्यम है। यद्यपि जनसंख्या के अनुपात को देखते हुए दुधारू पशुओं की संख्या काफी कम है।

जलपद में अलग–अलग क्षमता वाले डेढ़ दर्जन मुर्गी फार्म संचालित है किंतु यहाँ एक भी पशुआहार इकाई नहीं है। इसी प्रकार मृत जानवरों की खाल के संवर्धन हेतु भी कोई इकाई नहीं संचालित है जिस कारण मृत पशओं की खालें बहुत कम दाम पर कानपुर नगर या उन्नाव जनपद में बेची जाती हैं।

मत्स्य पालन

जनपद औरैया में कुल 1248 सर्वेक्षित तालाब हैं, जिनका कुल क्षेत्रफल लगभग 632 हेक्टेअर है। इन तालाबों में से 676 तालाब मत्स्यपालन हेतु उपयुक्त पाये गये हैं जिनका कुल क्षेत्रफल लगभग 342 हेक्टेअर है। इन तालाबों को नीतिगत आधार पर मत्स्यपालन हेतु पट्टे पर दिया जाता है, जिसकी अवधि 10 वर्ष तक होती है। जिले में मत्स्य उत्पादन के संवर्धन हेतु मत्स्यपालन विभाग द्वारा अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं। इसके अन्तर्गत मत्स्य पालकों को मछलीपालन हेतु प्रशिक्षण, मत्स्यपालन हेतु सामग्री भी उपलब्ध कराई जाती है। मत्स्य पालन विभाग द्वारा निजी अथवा पट्टे वाले तालाबों पर अल्प ब्याजदर पर वित्तीय सहायता उपलब्ध करायी जाती है। निजी भूमि पर तालाब निर्माण हेतु भारत सरकार द्वारा अनुदान भी दिया जाता है। इसके अतिरिक्त मत्स्य पालन विभाग द्वारा मत्स्य पालन हेतु 10 दिन का प्रशिक्षण मानदेय के साथ दिया जाता है। विभाग द्वारा मत्स्यपालकों को उन्नत प्रजाति की अंगुलिकाओं (मछली का उन्नत बीज) भी उपलब्ध कराया जाता है।

सुझाव एवं निष्कर्ष

औरैया की 80% से अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है, अतः यह स्पष्ट तौर पर माना जा सकता है कि औरैया जनपद ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है जिसका मुख्य

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

आधार कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन व वनोपज पर आश्रित है। इसी प्रकार खनिज भी रोज़गार का अल्प साधन है।

औरैया जनपद में वर्तमान में लगभग 250000 भैंस एवं सवा लाख गोवंश है। इसके अतिरिक्त बड़ी संख्या में निराश्रय पशु भी हैं। इन पशुओं से प्रतिमाह लाखों टन गोबर उत्पन्न होता है जो व्यर्थ चला जाता है। इस गोबर का उपयोग एवं प्रबंधन करके जैविक खाद बनाकर खेतों में प्रयोग किया जा सकता है जिससे कृषि लागत कम होने के साथ ही पर्यावरण सौम्य कृषि की ओर कदम भी बढ़ाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त एक से अधिक पशु पालने वाले पशुपालक गोबर गैस प्लांट लगाकर भी ऊर्जा की बचत कर सकते हैं। गोबर से बायो–ईंधन बनाने वाले संयंत्रों की स्थापना भी की जा सकती है।

औरैया जनपद में पशुपालन को बढ़ावा देकर रोज़गार क्रांति की जा सकती है। जनपद में पशुआहार निर्माण को लघु उद्योग के रूप में प्रोत्साहित करके और अधिक रोज़गार सृजित किये जा सकते हैं। मृत जानवरों की खालों का उचित प्रबंधन कर उनको चर्म उद्योग इकाइयों को बेचकर किसानों व पशुपालकों की आय बढ़ाई जा सकती है। इसी प्रकार औरैया जनपद में मुर्गियों के लिए पथ आहार (मुर्गीदाना) बाहर से आता है जिसका निर्माण भी लघु या कुटीर उद्योग के रूप में किया जा सकता है और इसे कार्य को प्रोत्साहन देकर नये रोज़गार सृजित किये जा सकते हैं। औरैया जनपद में बंजर एवं चरागाह भूमि पर्याप्त क्षेत्रफल में है। चरागाह क्षेत्रों के विकास एवं पशुपालन को प्रोत्साहित करके दुग्ध क्रांति, रोज़गार सृजन के साथ ही पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण कदम भी उठाये जा सकते हैं। साथ ही बेसहारा पशुओं द्वारा फसलें चर जाने की समस्या से भी छुटकारा पाया जा सकता है।

औरैया जनपद में अनेक स्थानों पर रेहू युक्त मिट्टी पायी जाती है। यह रेहू स्वतः उत्पन्न होने वाला सोडियम का खनिज है जो अनेक स्थानों पर स्वतः पाया जाता है। इसको एकत्र कर शोधित करके साबुन एवं पाउडर बनाना, हस्तनिर्मित साबुन बनाना, कास्टिक सोडा एवं अन्य आधारित उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं जो जनपद की अर्थव्यवस्था में सुधार ला सकते हैं।

चूंकि औरैया जनपद में 80% से अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और यहाँ पर पर्याप्त चारागाह एवं वन भूमि उपलब्ध है, अतः यहाँ पर बकरी पालन, भेड़ पालन आदि को बढ़ावा दिया जा सकता है। वर्तमान में यह प्रमाणित हो चुका है कि बकरी का दूध मधुमेह में लाभदायक होने के साथ ही अनेक बीमारियों एवं शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि के लिए आवश्यक है, जिसके चलते शहरी क्षेत्रों में बकरी के दूध की मांग निरंतर बढ़ती जा रही है। बकरी के दूध और उसके सह–उत्पादों को प्रोत्साहित करके भी औरैया जनपद में रोज़गार की नवीन सम्भावनाएं तलाशी जा सकती हैं। वर्तमान में मत्स्य पालन में भी अनेक नवीन तकनीकों का समावेश हो चुका है। छोटी सी जगह पर कृत्रिम तालाब बनाकर भारी पैमाने पर मत्स्य उत्पादन किया जा रहा है। औरैया जनपद में भी इस दिशा में कार्य किया जा सकता है। वन एवं वन सम्पदा आधारित उद्योग जैसे बागवानी, इमारती लकड़ी प्रदाता वृक्ष जैसे साल, महोगनी, शीशम, पापुलर आदि के रोपण को प्रोत्साहन दिया

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

जाना चाहिए। इसी प्रकार चंदन के वृक्षारोपण को बढ़ावा देकर भी रोज़गार सृजन किया जा सकता है। इसी क्रम में औषधीय महत्व तथा विभिन्न प्रकार के फूलों के पौधों की खेती एवं बागवानी को बढ़ावा देकर भी नवीन रोज़गार सृजित किये जा सकते हैं।

मधुमक्खी पालन, लाख कीट पालन व रेशम कीट पालन जैसे उद्यमों को बढ़ावा देकर भी नवीन रोज़गार सृजित किये जा सकते हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि जनपद औरैया में सामाजिक एवं आर्थिक विकास में वन सम्पदा, पशुपालन, खनिज सम्पदा एवं कृषि का बहुत बड़ा योगदान है तथा इन क्षेत्रों में विकास एवं रोजगार सृजन की अपार सम्भावनाएं हैं जिन पर ध्यान देकर औरैया जनपद को एक सम्पन्न व समृद्ध जनपद के रूप में स्थापित किया जा सकता है।